शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-2 (April-June) 2026
Page No- 184-191
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :
डॉ. अपराजिता जॉय नंदी
सहायक प्राध्यापक (हिंदी),
श्री शंकराचार्य इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्रोफेशनल स्टडीज, रायपुर (छत्तीसगढ़).

Corresponding Author :
डॉ. अपराजिता जॉय नंदी
सहायक प्राध्यापक (हिंदी),
श्री शंकराचार्य इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्रोफेशनल स्टडीज, रायपुर (छत्तीसगढ़).

हिंदी बाल साहित्य में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा

सार : पर्यावरण आज वैश्विक चिंता का प्रमुख विषय बन चुका है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, जनसंख्या वृद्धि तथा प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण पर्यावरणीय संकट निरंतर गहराता जा रहा है। ऐसी स्थिति में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन-जागरूकता अत्यंत आवश्यक है। बच्चों में पर्यावरणीय चेतना का विकास भविष्य के सतत् विकास की आधारशिला है। हिंदी बाल साहित्य इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बाल साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि वह बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक विकास और सामाजिक चेतना के निर्माण का प्रभावी माध्यम भी है। हिंदी बाल साहित्य में प्रकृति, वन्यजीव, जल, वायु, वृक्ष तथा जैव विविधता के संरक्षण संबंधी अनेक रचनाएँ उपलब्ध हैं, जो बच्चों में पर्यावरण के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित करती हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में हिंदी बाल साहित्य में निहित पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा का विश्लेषण किया गया है। साथ ही प्रमुख बाल साहित्यकारों की रचनाओं के माध्यम से पर्यावरणीय चेतना के विविध आयामों का अध्ययन किया गया है। शोध में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि बाल साहित्य किस प्रकार बच्चों के मन में प्रकृति के प्रति प्रेम, जिम्मेदारी तथा संरक्षण की भावना विकसित करता है। बाल कहानियों, कविताओं और अन्य साहित्यिक विधाओं में पर्यावरणीय समस्याओं तथा उनके समाधान को सरल और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यह साहित्य बच्चों को वृक्षारोपण, जल संरक्षण, स्वच्छता, जैव विविधता संरक्षण तथा प्रदूषण नियंत्रण जैसे विषयों के प्रति जागरूक बनाता है। वर्तमान पर्यावरणीय चुनौतियों के संदर्भ में हिंदी बाल साहित्य की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि यह नई पीढ़ी को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील, जागरूक एवं उत्तरदायी नागरिक बनाने में सहायक सिद्ध होता है।

मुख्य शब्द : हिंदी बाल साहित्य, पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरणीय चेतना, प्रकृति, बाल मनोविज्ञान, सतत् विकास।

प्रस्तावना : मानव और प्रकृति का संबंध अत्यंत प्राचीन, घनिष्ठ तथा परस्पर निर्भरता पर आधारित रहा है। मानव जीवन की समस्त

आवश्यकताएँ जल, वायु, भोजन, आवास तथा ऊर्जा प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रकृति से ही प्राप्त होती हैं। पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व एवं विकास के लिए पर्यावरण का संतुलित एवं स्वस्थ होना अनिवार्य है। पर्यावरण में जल, वायु, भूमि, वनस्पति, पशु-पक्षी, वन, पर्वत तथा अन्य प्राकृतिक संसाधन सम्मिलित होते हैं, जो जीवन-चक्र को निरंतर संचालित करते हैं। किंतु आधुनिक युग में तीव्र औद्योगीकरण, नगरीकरण, जनसंख्या वृद्धि तथा प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन के कारण पर्यावरणीय संतुलन निरंतर प्रभावित हो रहा है। परिणामस्वरूप जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, भूमि क्षरण, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग तथा जैव विविधता के ह्रास जैसी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं, जो मानव सभ्यता के लिए चुनौती का रूप ले चुकी हैं। वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण केवल एक वैज्ञानिक या सामाजिक विषय नहीं, बल्कि वैश्विक चिंता का केंद्र बन गया है। पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए केवल सरकारी नीतियाँ और योजनाएँ पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति की सक्रिय सहभागिता आवश्यक है। विशेष रूप से बच्चों में पर्यावरणीय चेतना का विकास अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे भविष्य के नागरिक और राष्ट्र-निर्माता हैं। बाल्यावस्था में प्राप्त संस्कार, मूल्य और व्यवहार जीवनभर व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। इसलिए पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का विकास बचपन से ही किया जाना चाहिए। इसी दृष्टि से प्रस्तुत शोध-पत्र में हिंदी बाल साहित्य में निहित पर्यावरण संरक्षण संबंधी विचारों, मूल्यों एवं चेतना का विश्लेषण किया गया है तथा यह समझने का प्रयास किया गया है कि बाल साहित्य किस प्रकार पर्यावरण-अनुकूल समाज के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा : पर्यावरण संरक्षण का अर्थ प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, संवर्धन तथा उनका विवेकपूर्ण उपयोग करना है ताकि वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। पर्यावरण संरक्षण का उद्देश्य प्रकृति और मानव के मध्य संतुलन स्थापित करना है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिपादित सतत् विकास की अवधारणा भी इसी विचार पर आधारित है कि विकास ऐसा हो जो वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करे, परंतु भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता न करे। भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण की परंपरा प्राचीन काल से रही है। वेदों, उपनिषदों तथा पुराणों में प्रकृति को पूजनीय माना गया है। वृक्ष, नदियाँ, पर्वत तथा पशु-पक्षियों के प्रति सम्मान का भाव भारतीय जीवन-दृष्टि का अभिन्न अंग रहा है। यही दृष्टिकोण हिंदी बाल साहित्य में भी परिलक्षित होता है।

हिंदी बाल साहित्य का स्वरूप और उद्देश्य : बाल साहित्य साहित्य की वह विधा है जो विशेष रूप से बालकों की आयु, रुचि, मनोविज्ञान, कल्पनाशक्ति, अनुभव तथा बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखकर रची जाती है। इसका उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं होता, बल्कि बालकों के सर्वांगीण विकास में सहायक बनना भी होता है। बाल साहित्य बच्चों के भीतर नैतिक मूल्यों, सामाजिक चेतना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सांस्कृतिक संस्कार तथा मानवीय संवेदनाओं का विकास करता है। हिंदी बाल साहित्य भारतीय साहित्य की एक समृद्ध और महत्वपूर्ण धारा है, जिसने समय-समय पर बालकों के व्यक्तित्व निर्माण में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। प्रसिद्ध बाल साहित्यकार एवं आलोचक हरिकृष्ण देवसरे के अनुसार, **"बाल साहित्य वह साहित्य है जो बालकों की जिज्ञासाओं को संतुष्ट करे, उनकी कल्पना को विस्तार दे तथा उनके मानसिक विकास में सहायक हो।"**[1] इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि बाल साहित्य का संबंध केवल मनोरंजन से नहीं, बल्कि शिक्षा और संस्कार से भी है। बाल साहित्य बालकों को जीवन के विविध पक्षों से परिचित कराता है तथा उन्हें एक जागरूक नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करता है। हिंदी बाल साहित्य अनेक विधाओं में विकसित हुआ है। इनमें बाल कविता, बाल कहानी, बाल उपन्यास, बाल नाटक, जीवनी, लोककथाएँ तथा विज्ञान साहित्य प्रमुख हैं। प्रत्येक विधा का अपना विशिष्ट महत्व है और वह बालकों के विकास में अलग-अलग प्रकार से योगदान देती है। **बाल कविता** हिंदी बाल साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधाओं में से एक है। बाल कविताएँ सरल भाषा, लयात्मकता तथा रोचक विषयवस्तु के कारण बच्चों को सहज रूप से आकर्षित करती हैं। सोहनलाल द्विवेदी की कविता **"चल पड़े जिधर दो डग मग में"** तथा

शेरजंग गर्ग की अनेक बाल कविताएँ बच्चों में उत्साह, नैतिकता और प्रकृति प्रेम की भावना विकसित करती हैं। शेरजंग गर्ग अनुसार , **"बाल कविता में लय और आनंद के साथ-साथ जब पर्यावरण के तत्वों जैसे रोती हुई नदियां या सूखते पेड़ को मानवीय संवेदना दी जाती है, तो बच्चा प्रकृति के दर्द को सीधे अपने दिल से महसूस करता है।"**[2]

इसी प्रकार दिविक रमेश की कविताओं में भी प्रकृति, पक्षियों और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण दिखाई देता है। **बाल कहानी** बाल साहित्य की अत्यंत प्रभावशाली विधा है। कहानियों के माध्यम से बच्चों को मनोरंजन के साथ-साथ नैतिक शिक्षा और सामाजिक मूल्य प्रदान किए जाते हैं। पंचतंत्र और हितोपदेश की कहानियाँ इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जिनमें पशु-पक्षियों को पात्र बनाकर जीवनोपयोगी संदेश दिए गए हैं। आधुनिक हिंदी बाल साहित्य में हरिकृष्ण देवसरे, प्रकाश मनु तथा उषा यादव की कहानियाँ बच्चों को सामाजिक और पर्यावरणीय सरोकारों से जोड़ती हैं। **बाल उपन्यास** बालकों की कल्पनाशक्ति और चिंतन क्षमता को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बाल उपन्यासों में साहसिक घटनाएँ, वैज्ञानिक तथ्य, सामाजिक समस्याएँ तथा प्रकृति संबंधी विषयों का समावेश होता है। प्रकाश मनु और अन्य समकालीन लेखकों के बाल उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान के साथ-साथ सामाजिक उत्तरदायित्व का भी समावेश दिखाई देता है। **बाल नाटक** बच्चों के व्यक्तित्व विकास और अभिव्यक्ति क्षमता के लिए अत्यंत उपयोगी विधा है। विद्यालयों में मंचित बाल नाटक बच्चों में आत्मविश्वास, सहयोग और नेतृत्व क्षमता का विकास करते हैं। कई बाल नाटकों में स्वच्छता, वृक्षारोपण, जल संरक्षण तथा पर्यावरण सुरक्षा जैसे विषयों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। **लोककथाएँ** भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की अमूल्य धरोहर हैं। लोककथाओं में लोकजीवन, प्रकृति, पशु-पक्षी और मानवीय मूल्यों का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। अकबर-बीरबल, तेनालीराम तथा विभिन्न क्षेत्रों की लोककथाएँ बच्चों के मनोरंजन के साथ-साथ उनकी बौद्धिक क्षमता का विकास करती हैं।

आधुनिक युग में **विज्ञान साहित्य** का महत्व निरंतर बढ़ा है। विज्ञान आधारित बाल साहित्य बच्चों में तार्किकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और जिज्ञासा का विकास करता है। गुणाकर मुले, जयंत नार्लीकर तथा हरिकृष्ण देवसरे जैसे लेखकों ने विज्ञान को सरल और रोचक रुप में प्रस्तुत कर बाल साहित्य को समृद्ध बनाया है। हिंदी बाल साहित्य का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बच्चों में सामाजिक एवं पर्यावरणीय चेतना का विकास करना भी है। वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषण, जल संकट, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता के ह्रास जैसी समस्याएँ गंभीर रूप धारण कर चुकी हैं। ऐसे में बाल साहित्य बच्चों को प्रकृति के महत्व से परिचित कराता है तथा उनमें पर्यावरण संरक्षण के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करता है। अनेक बाल कविताओं, कहानियों और नाटकों में वृक्षों के महत्व, जल संरक्षण, स्वच्छता तथा वन्यजीव सुरक्षा का संदेश दिया गया है। उदाहरणस्वरुप, वृक्षारोपण और प्रकृति संरक्षण विषयक बाल रचनाएँ बच्चों को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाती हैं तथा उन्हें प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देती हैं। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) की 'एक्शन फॉर क्लाइमेट एम्पॉवरमेंट' (ACE) पहल के अनुसार, **"वैश्विक स्तर पर बच्चों के अनुकूल संचार माध्यमों (जैसे बाल साहित्य और कहानियों) के जरिए बचपन से ही पर्यावरण चेतना विकसित करना जलवायु संकट का सबसे स्थायी समाधान है।"**[3] अतः कहा जा सकता है कि हिंदी बाल साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि बालकों के बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय विकास का सशक्त साधन है। यह बच्चों में मानवीय मूल्यों, राष्ट्रीय चेतना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा प्रकृति-प्रेम का विकास कर उन्हें एक जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

हिंदी बाल साहित्य में पर्यावरणीय चेतना : हिंदी बाल साहित्य में पर्यावरणीय चेतना विविध रुपों में अभिव्यक्त हुई है। बाल साहित्यकारों ने प्रकृति, वृक्षों, जल, वन्यजीवों तथा पर्यावरण संरक्षण से जुड़े विषयों को अपनी रचनाओं का महत्वपूर्ण आधार बनाया है। बाल कहानियों, कविताओं और नाटकों के माध्यम से बच्चों में प्रकृति

के प्रति प्रेम, संवेदनशीलता तथा संरक्षण की भावना विकसित की जाती है। साथ ही पर्यावरणीय समस्याओं और उनके समाधान के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने का प्रयास भी किया जाता है। इस प्रकार हिंदी बाल साहित्य बच्चों में पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व और सतत् विकास की चेतना का निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जो इस प्रकार है:

1. **प्रकृति प्रेम की भावना :** हिंदी बाल साहित्य में प्रकृति प्रेम की भावना अत्यंत सशक्त रूप में व्यक्त हुई है। बाल साहित्यकारों ने प्रकृति के विविध रूपों सूर्य, चंद्रमा, तारे, नदी, पर्वत, वृक्ष, फूल, पक्षी तथा ऋतुओं का आकर्षक और सजीव चित्रण करके बच्चों को प्रकृति के निकट लाने का प्रयास किया है। प्रकृति का यह सौंदर्यपूर्ण चित्रण बालकों के मन में उसके प्रति प्रेम, जिज्ञासा और संवेदनशीलता उत्पन्न करता है। हिंदी के प्रसिद्ध बाल कवि **सोहनलाल द्विवेदी** की कविताओं में प्रकृति के प्रति गहरा अनुराग दिखाई देता है। उनकी रचनाएँ बच्चों को प्रकृति के साथ सक्रिय संबंध स्थापित करने की प्रेरणा देती हैं। इसी प्रकार **शेरजंग गर्ग** तथा **दिविक रमेश** की बाल कविताओं में पक्षियों, पेड़-पौधों और प्राकृतिक दृश्यों का सहज एवं बाल-सुलभ चित्रण मिलता है, जो बच्चों के मन में प्रकृति के प्रति आत्मीय भाव जगाता है। उदाहरण के लिए, अनेक बाल कविताओं में चिड़िया, तितली, फूल और वर्षा को बच्चों का मित्र बनाकर प्रस्तुत किया गया है। इससे बालक प्रकृति को केवल देखने की वस्तु नहीं, बल्कि अपने जीवन के अभिन्न साथी के रूप में अनुभव करता है। हिंदी बाल पत्रिकाओं जैसे नंदन, बाल भारती और चंपक में प्रकाशित प्रकृति-आधारित कहानियाँ एवं कविताएँ भी बच्चों में प्रकृति-प्रेम और पर्यावरणीय चेतना का विकास करती हैं। इस प्रकार हिंदी बाल साहित्य में प्रकृति को मित्र, सहचर और प्रेरणास्रोत के रूप में चित्रित किया गया है। प्रकृति के प्रति यह आत्मीयता ही आगे चलकर बच्चों में पर्यावरण संरक्षण की भावना को विकसित करती है और उन्हें प्रकृति के प्रति उत्तरदायी बनने की प्रेरणा प्रदान करती है।
2. **वृक्षों का महत्व :** हिंदी बाल साहित्य में वृक्षों को मानव जीवन का आधार और प्रकृति का अमूल्य उपहार माना गया है। अनेक बाल कविताओं, कहानियों तथा नाटकों में वृक्षों को जीवनदाता के रूप में चित्रित किया गया है। बच्चों को सरल भाषा में यह बताया जाता है कि वृक्ष हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, पर्यावरण को शुद्ध रखते हैं, वर्षा में सहायक होते हैं तथा अनेक जीव-जंतुओं को आश्रय प्रदान करते हैं।प्रसिद्ध बाल साहित्यकार हरिकृष्ण देवसरे तथा शेरजंग गर्ग की अनेक रचनाओं में वृक्षों के महत्व को रेखांकित किया गया है। बाल पत्रिकाओं नंदन, बाल भारती और चंपक में प्रकाशित वृक्षारोपण विषयक कहानियाँ बच्चों को पेड़ लगाने तथा उनकी देखभाल करने के लिए प्रेरित करती हैं। कई बाल कविताओं में पेड़ों को बच्चों का सच्चा मित्र बताया गया है, जो बिना किसी स्वार्थ के छाया, फल, फूल और स्वच्छ वायु प्रदान करते हैं। उदाहरणस्वरूप, वृक्षारोपण आधारित बाल रचनाओं में यह संदेश दिया जाता है कि "एक पेड़ सौ पुत्रों के समान" होता है। ऐसी रचनाएँ बच्चों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण विकसित करती हैं तथा उन्हें वृक्षों के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रेरित करती हैं। दिविक रमेश के अनुसार **"आज जब ग्लोबल वार्मिंग और कंक्रीट के जंगल बच्चों से उनका बचपन और उनकी हरियाली छीन रहे हैं, तब बाल साहित्यकार का यह परम दायित्व है कि वह अपनी रचनाओं के माध्यम से बच्चों में 'पर्यावरणीय चेतना' का बीजारोपण करे।"**[4] इस प्रकार हिंदी बाल साहित्य वृक्षों के महत्व को स्थापित करते हुए पर्यावरणीय चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
3. **जल संरक्षण की भावना :** जल जीवन का आधार है और इसके बिना पृथ्वी पर किसी भी प्रकार के जीवन की कल्पना असंभव है। हिंदी बाल साहित्य में जल संरक्षण का संदेश अनेक कहानियों, कविताओं, बाल नाटकों तथा प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन रचनाओं में नदियों, तालाबों, कुओं, झरनों तथा वर्षा जल के महत्व को सरल एवं बाल-सुलभ भाषा में समझाया गया है, जिससे बच्चों में

जल के प्रति संवेदनशीलता विकसित होती है। बाल साहित्य में यह भी स्पष्ट किया गया है कि जल केवल उपयोग की वस्तु नहीं, बल्कि एक अमूल्य प्राकृतिक संसाधन है, जिसका संरक्षण अत्यंत आवश्यक है। अनेक बाल कहानियों में बच्चों को यह सीख दी जाती है कि नल को खुला छोड़ना, अनावश्यक पानी बहाना या जल स्रोतों को प्रदूषित करना भविष्य के लिए गंभीर संकट उत्पन्न कर सकता है। इसी प्रकार बाल कविताओं में जल बचाने, वर्षा जल संचयन करने तथा स्वच्छ जल के महत्व को सरल एवं लयात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है। उदाहरण के रूप में, विभिन्न बाल साहित्य रचनाओं में **"पानी बचाओ, जीवन बचाओ"** जैसे संदेश दिए जाते हैं, वहीं कई प्रेरक बाल कहानियाँ यह दर्शाती हैं कि किस प्रकार छोटी-छोटी सावधानियों से जल की बड़ी मात्रा को बचाया जा सकता है। कुछ रचनाओं में किसान, नदी और बच्चों के संवाद के माध्यम से जल के महत्व को रोचक रूप में समझाया गया है। इसी तरह बाल नाटकों में विद्यालय स्तर पर जल संरक्षण की भूमिका को प्रस्तुत कर बच्चों को व्यवहारिक रूप से जागरूक किया जाता है। इस प्रकार हिंदी बाल साहित्य जल संरक्षण को केवल सैद्धांतिक विषय न मानकर एक व्यवहारिक जीवन-मूल्य के रूप में स्थापित करता है। यह बच्चों में जल के प्रति सम्मान, जिम्मेदारी और संरक्षण की भावना विकसित कर उन्हें पर्यावरण के प्रति सजग नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

4. **वन्यजीव संरक्षण :** वन्यजीव पर्यावरणीय संतुलन के अत्यंत महत्वपूर्ण घटक हैं, क्योंकि ये पारिस्थितिकी तंत्र की खाद्य श्रृंखला और जैव विविधता को संतुलित बनाए रखने में सहायक होते हैं। हिंदी बाल साहित्य में पशु-पक्षियों को प्रमुख पात्रों के रूप में प्रस्तुत करने की एक सुदीर्घ परंपरा रही है। पंचतंत्र और हितोपदेश की प्राचीन कथा-परंपरा से लेकर आधुनिक बाल साहित्य तक, पशु-पक्षियों के माध्यम से नैतिक, सामाजिक तथा पर्यावरणीय शिक्षा देने का कार्य निरंतर किया जा रहा है। बाल कहानियों में शेर, हाथी, खरगोश, कौआ, लोमड़ी, कछुआ और हिरण जैसे पशु-पक्षियों को पात्र बनाकर रोचक घटनाओं के माध्यम से जीवनोपयोगी संदेश दिए जाते हैं। इन कहानियों में यह भी दर्शाया जाता है कि प्रत्येक जीव का प्रकृति में अपना विशेष महत्व है और किसी भी जीव का अनावश्यक विनाश पर्यावरणीय असंतुलन पैदा कर सकता है। उदाहरणस्वरुप, पंचतंत्र की कहानियाँ बच्चों को यह सिखाती हैं कि बुद्धिमत्ता, सहयोग और करुणा के माध्यम से जीवन की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है, जबकि आधुनिक बाल कहानियाँ वन्यजीवों के संरक्षण और उनके प्राकृतिक आवास की सुरक्षा पर बल देती हैं।

हिंदी बाल साहित्य में पशु-पक्षियों के प्रति करुणा, सहानुभूति और संवेदनशीलता विकसित करने पर विशेष ध्यान दिया गया है। कई बाल कविताओं में पक्षियों की स्वतंत्र उड़ान, उनकी मधुर ध्वनि और प्रकृति में उनके योगदान का सुंदर चित्रण मिलता है, जिससे बच्चों में उनके प्रति प्रेमभाव उत्पन्न होता है। इसी प्रकार बाल नाटकों और कहानियों में शिकार, वनों की कटाई तथा पर्यावरणीय असंतुलन के दुष्परिणामों को भी प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। प्रकाश मनु के अनुसार **"हिंदी बाल कविता और कहानियों की परंपरा हमेशा से प्रकृति के सह-अस्तित्व पर आधारित रही है। भारतेन्दु युग से लेकर समकालीन दौर तक, बाल साहित्य ने बच्चों को 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना सिखाई है, जिसमें पेड़-पौधे और जीव-जंतु भी हमारे परिवार का हिस्सा हैं।"**[5] इस प्रकार हिंदी बाल साहित्य वन्यजीव संरक्षण की चेतना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह बच्चों को यह समझने में सहायता करता है कि जैव विविधता का संरक्षण ही संतुलित और स्वस्थ पर्यावरण की आधारशिला है, और प्रत्येक जीव का संरक्षण मानव जीवन के लिए आवश्यक है।

5. **प्रदूषण के प्रति जागरूकता** : आधुनिक हिंदी बाल साहित्य में प्रदूषण की समस्या को अत्यंत गंभीर एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। औद्योगीकरण, शहरीकरण तथा तकनीकी विकास के कारण उत्पन्न वायु, जल और ध्वनि प्रदूषण जैसी समस्याओं को बाल-सुलभ भाषा में सरल उदाहरणों के माध्यम से समझाने का प्रयास किया गया है। बाल साहित्यकारों ने इन रचनाओं में प्रदूषण के दुष्प्रभावों को स्पष्ट करते हुए बच्चों

को स्वच्छ एवं स्वस्थ पर्यावरण के महत्व से परिचित कराया है। वायु प्रदूषण के संदर्भ में बाल साहित्य में वाहनों के धुएँ, फैक्ट्रियों की चिमनियों और बढ़ते शहरीकरण के प्रभावों को दर्शाया गया है, जिससे बच्चों को स्वच्छ वायु के महत्व का ज्ञान होता है। इसी प्रकार जल प्रदूषण पर आधारित कहानियों और कविताओं में नदियों, तालाबों और जल स्रोतों को गंदा करने के परिणामों को सरल ढंग से प्रस्तुत किया गया है। ध्वनि प्रदूषण के संबंध में भी बाल साहित्य में तेज आवाज वाले उपकरणों और अनावश्यक शोर के दुष्परिणामों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है। कहानियों, कविताओं तथा बाल नाटकों के माध्यम से बच्चों को स्वच्छता, कचरा प्रबंधन, पुनर्चक्रण (रीसाइक्लिंग) तथा पर्यावरण संरक्षण के व्यावहारिक उपायों की जानकारी दी जाती है। उदाहरणस्वरूप, अनेक बाल रचनाओं में यह संदेश दिया जाता है कि कचरे को निर्धारित स्थान पर डालना, प्लास्टिक का कम उपयोग करना तथा स्वच्छता बनाए रखना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। इस प्रकार हिंदी बाल साहित्य प्रदूषण के प्रति जागरूकता उत्पन्न कर बच्चों में पर्यावरण संरक्षण की भावना विकसित करता है और उन्हें स्वच्छ, स्वस्थ तथा संतुलित पर्यावरण के निर्माण हेतु प्रेरित करता है।

हिंदी बाल साहित्य के प्रमुख रचनाकार एवं पर्यावरणीय योगदान : हिंदी बाल साहित्य के अनेक रचनाकारों ने पर्यावरण संरक्षण को अपनी रचनाओं का केंद्रीय विषय बनाकर बच्चों में प्रकृति-प्रेम, संवेदनशीलता तथा पर्यावरणीय चेतना विकसित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इन साहित्यकारों की रचनाएँ न केवल मनोरंजन करती हैं, बल्कि बालकों को प्रकृति के प्रति जिम्मेदार और जागरूक नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित भी करती हैं।

1. **हरिकृष्ण देवसरे :** हरिकृष्ण देवसरे हिंदी बाल साहित्य के अत्यंत प्रतिष्ठित और प्रभावशाली रचनाकारों में से एक हैं। उनकी रचनाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सामाजिक चेतना और पर्यावरणीय संवेदनशीलता का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। उन्होंने बालकों के लिए ऐसा साहित्य रचा जो जिज्ञासा, तर्कशीलता और प्रकृति के प्रति सम्मान की भावना विकसित करता है। उनकी रचनाएँ बच्चों में पर्यावरण संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग तथा प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व की भावना विकसित करती हैं। इस प्रकार देवसरे का बाल साहित्य पर्यावरणीय चेतना के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देता है।
2. **प्रकाश मनु :** प्रकाश मनु आधुनिक हिंदी बाल साहित्य के प्रमुख रचनाकार हैं। उनकी बाल कहानियों और उपन्यासों में प्रकृति, पशु-पक्षियों तथा मानवीय संवेदनाओं का सजीव चित्रण मिलता है। वे बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा देते हैं। उनकी रचनाएँ प्रकृति के संरक्षण, सह-अस्तित्व और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व का प्रभावी संदेश प्रदान करती हैं।
3. **दिविक रमेश :** दिविक रमेश हिंदी बाल कविता के महत्वपूर्ण रचनाकार हैं। उनकी कविताओं में प्रकृति के विविध रूपों का सरल, सुंदर और बाल-सुलभ चित्रण मिलता है। फूल, तितलियाँ, पक्षी, वर्षा और पेड़-पौधों के माध्यम से वे बच्चों को प्रकृति के निकट लाते हैं। उनकी रचनाएँ बच्चों में प्रकृति-प्रेम, पर्यावरणीय संवेदनशीलता तथा संरक्षण की भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
4. **शेरजंग गर्ग :** शेरजंग गर्ग हिंदी बाल साहित्य के लोकप्रिय कवि हैं। उनकी बाल कविताओं में प्रकृति, वृक्षों, पक्षियों तथा पर्यावरण से जुड़े विषयों का सरल और रोचक चित्रण मिलता है। वे बच्चों को प्रकृति-प्रेम, स्वच्छता तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करते हैं। उनकी रचनाएँ बालकों में पर्यावरणीय चेतना और नैतिक मूल्यों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।
5. **डॉ. परशुराम शुक्ल :** डॉ. परशुराम शुक्ल ने बाल साहित्य में वन्यजीवों, जैव विविधता और पर्यावरण विषयों पर उल्लेखनीय लेखन किया है। उनकी कृतियाँ *"हमारे राज्यीय पशु और पक्षी"* तथा वन्यजीव-आधारित बाल साहित्य बच्चों को जैव विविधता और पर्यावरण संरक्षण के महत्व से परिचित कराती हैं। उनकी रचनाएँ ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ पर्यावरणीय चेतना का भी विकास करती हैं।

बाल साहित्य और पर्यावरण शिक्षा : पर्यावरण शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल ज्ञान का संप्रेषण करना नहीं है, बल्कि व्यक्तित्व में व्यवहारिक परिवर्तन लाना भी है, ताकि व्यक्ति प्रकृति के प्रति उत्तरदायी और संवेदनशील बन सके। इस संदर्भ में बाल साहित्य एक अत्यंत प्रभावी माध्यम के रूप में कार्य करता है, क्योंकि यह बच्चों की मानसिकता, रुचि और कल्पनाशक्ति के अनुरुप सरल एवं रोचक शैली में पर्यावरणीय संदेशों को प्रस्तुत करता है। बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों को पर्यावरणीय समस्याओं जैसे प्रदूषण, वनों की कटाई, जल संकट तथा जैव विविधता के ह्रास की जानकारी सहज रुप में प्राप्त होती है। इसके साथ ही उनमें प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और पर्यावरण संरक्षण की भावना विकसित होती है। बाल साहित्य बच्चों में पर्यावरण-अनुकूल व्यवहार को बढ़ावा देता है, जैसे वृक्षारोपण, जल संरक्षण, स्वच्छता बनाए रखना और प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना। इन रचनाओं के माध्यम से सतत् विकास के मूल्यों का भी निर्माण होता है, जिससे बच्चे यह समझ पाते हैं कि वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के संसाधनों की सुरक्षा भी आवश्यक है। विद्यालयी शिक्षा में बाल साहित्य को समुचित रुप से शामिल करने से पर्यावरण संरक्षण संबंधी मूल्यों का विकास अधिक प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। जब कक्षा शिक्षण में कहानियों, कविताओं और नाटकों के माध्यम से पर्यावरणीय संदेश दिए जाते हैं, तो वे बच्चों के मन पर गहरा प्रभाव डालते हैं। इस प्रकार बाल साहित्य पर्यावरण शिक्षा को व्यवहारिक, रोचक और प्रभावशाली बनाकर नई पीढ़ी को पर्यावरण के प्रति जागरुक और जिम्मेदार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

समकालीन संदर्भ में हिंदी बाल साहित्य की भूमिका : समकालीन संदर्भ में हिंदी बाल साहित्य की भूमिका आज के इस तकनीकी और औद्योगिक युग में अभूतपूर्व रुप से महत्वपूर्ण हो गई है, क्योंकि आज हमारी पूरी पृथ्वी जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन परत के क्षरण और अनियंत्रित पर्यावरण प्रदूषण जैसी भयानक विभीषिकाओं का सामना कर रही है। इस डिजिटल क्रांति के दौर में जहाँ स्मार्टफोन, वीडियो गेम्स और सोशल मीडिया ने बच्चों को कमरों में कैद कर दिया है, वहीं उनका प्रकृति, मिट्टी, नदी और पेड़ों से प्रत्यक्ष जीवंत संपर्क पूरी तरह टूट चुका है। ऐसी संवेदनशून्य होती स्थिति में हिंदी बाल साहित्य केवल मनोरंजन का साधन न रहकर, बच्चों को उनकी जड़ों और प्रकृति से दोबारा जोड़ने का एक बेहद सशक्त, भावनात्मक और रचनात्मक सेतु बन सकता है। हरिकृष्ण देवसरे के अनुसार, **"बाल साहित्य का मूल उद्देश्य केवल मनोरंजन या कोरी कल्पनाओं का जाल बुनना नहीं है, बल्कि बदलते समय के साथ बच्चे को उसके परिवेश के प्रति सजग और संवेदनशील बनाना भी है। आज के संकटों को बाल मन के अनुकूल ढालना ही समकालीन लेखन की सार्थकता है।"**[6] आज समय की माँग है कि बाल साहित्यकार पर्यावरण के इन गंभीर संकटों और उनके वैज्ञानिक समाधानों को किसी उबाऊ उपदेश या पाठ्यपुस्तक के शुष्क पाठ की तरह पेश करने के बजाय, उन्हें अत्यंत मनोरंजक कहानियों, कौतुकभरी कविताओं और जीवंत नाटकों के माध्यम से बच्चों के सामने रखें।

उदाहरण के लिए, जब पंचतंत्र की आधुनिक शैली में नदियाँ खुद अपना दर्द बयां करेंगी, प्लास्टिक की थैलियों से परेशान होकर पशु-पक्षी बच्चों से गुहार लगाएंगे, या गौरैया के गायब होने के दर्द को किसी जासूसी व साहसिक कथानक में पिरोया जाएगा, तब बच्चों में न केवल गहरी संवेदनशीलता जागेगी बल्कि उनका दृष्टिकोण भी तार्किक और वैज्ञानिक बनेगा। बचपन में कहानियों के माध्यम से बोए गए जल संरक्षण, वृक्षारोपण, कचरा प्रबंधन और 'नो प्लास्टिक' जैसे विचार उनके अवचेतन मन पर अमिट छाप छोड़ते हैं, जो आगे चलकर उन्हें केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रखते, बल्कि अपने दैनिक जीवन में पर्यावरण के प्रति सजग, उत्तरदायी और सक्रिय 'ग्रीन वॉरियर्स' (पर्यावरण योद्धा) के रूप में गढ़ते हैं। अतः आज के हिंदी बाल साहित्य को राजा-रानियों और परियों की काल्पनिक दुनिया से बाहर निकलकर इस कड़वे समकालीन यथार्थ को स्वीकार करना होगा, क्योंकि जब बाल साहित्य बच्चों की उंगली पकड़कर उन्हें स्क्रीन की आभासी दुनिया से बाहर लाएगा और प्रकृति के सह-अस्तित्व का पाठ पढ़ाएगा, तभी हम एक सुरक्षित, स्वस्थ और हरे-भरे भविष्य की उम्मीद कर सकते हैं।

निष्कर्ष : हिंदी बाल साहित्य में पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा अत्यंत सशक्त रूप में उपस्थित है। यह साहित्य बच्चों में प्रकृति के प्रति प्रेम, संवेदनशीलता और संरक्षण की चेतना विकसित करता है। वृक्षारोपण, जल संरक्षण, वन्यजीव सुरक्षा, प्रदूषण नियंत्रण तथा जैव विविधता संरक्षण जैसे विषयों को बाल-सुलभ भाषा और रोचक शैली में प्रस्तुत किया गया है। हिंदी बाल साहित्य न केवल मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि पर्यावरणीय शिक्षा और सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रभावी साधन भी है। वर्तमान पर्यावरणीय संकटों के संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। आवश्यकता इस बात की है कि विद्यालयों, पुस्तकालयों तथा पारिवारिक वातावरण में पर्यावरण संबंधी बाल साहित्य को अधिकाधिक स्थान दिया जाए ताकि आने वाली पीढ़ियाँ पर्यावरण संरक्षण के प्रति सजग और उत्तरदायी बन सकें।

संदर्भ सूची :

1. देवसरे, हरिकृष्ण, (1969), हिंदी बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एंड संस, नई दिल्ली।
2. जाधव, डॉ.आर.एम. (2023), हिंदी बाल साहित्य: विविध आयाम, ए.आर. पब्लिकेशन कंपनी, दिल्ली।
3. संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) की 'एक्शन फॉर क्लाइमेट एम्पॉवरमेंट' (ACE) पहल के अनुसार।
4. पाण्डेय विनोद चन्द्र, (1996), भारतीय बाल साहित्य का विविध आयाम, उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ।
5. मनु, प्रकाश (2018), हिंदी बाल साहित्य का इतिहास, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
6. देवसरे, हरिकृष्ण, (1969), हिंदी बाल साहित्य : एक अध्ययन, आत्माराम एंड संस, नई दिल्ली।

•